

पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड- XXXI अंक-09

15 मई, 2026



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

हिंदी कक्ष

<https://hindi.iitd.ac.in/>



**“जो कुछ हमारा है वो हम तक तभी पहुँचता है
जब हम उसे ग्रहण करने की क्षमता विकसित करते हैं।”**

रवींद्रनाथ टैगोर

(7 मई 1861-7 अगस्त 1941)

मुख्य बिंदु

- नियुक्तियाँ
- उद्योग सदस्यता कार्यक्रम की शुरुआत
- संस्थान में 'जय भीम सप्ताह -2026' का आयोजन
- आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता शृंखला के 11वें सत्र का आयोजन
- विश्व पुस्तक दिवस (23 अप्रैल) विशेष: किताबों से दोस्ती

नियुक्तियाँ

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या: IITD/68/2025-REGISOFFI/2937/2026 दिनांक 30 अप्रैल, 2026 के अनुसार निदेशक महोदय ने **प्रो. पी. विगनेश्वर इलावरसन** को 01 मई, 2026 से दो वर्ष की अवधि के लिए प्रबंध अध्ययन विभाग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया है।

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या: IITD/68/2025-REGISOFFI/3016/2026 दिनांक 5 मई, 2026 के अनुसार निदेशक महोदय ने **प्रो. सुमेर सिंह** को 06 मई, 2026 से दो वर्ष की अवधि के लिए डिज़ाइन विभाग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया है।

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या: IITD/68/2025-REGISOFFI/3016/2026 दिनांक 5 मई, 2026 के अनुसार निदेशक महोदय ने **प्रो. लीना नेमानी** को 06 मई, 2026 से दो वर्ष की अवधि के लिए पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया है।

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या: IITD/68/2025-REGISOFFI/1/3129/2026 दिनांक 8 मई, 2026 के अनुसार निदेशक महोदय ने **प्रो. रवि पी. सिंह**, रसायन विज्ञान विभाग को तत्काल प्रभाव से कुमाऊँ छात्रावास में हेड ऑफ़ हाउस (जिसे पहले हाउस मास्टर कहा जाता था) के रूप में नियुक्त किया है।

उद्योग सदस्यता कार्यक्रम की शुरुआत

संस्थान ने एक उद्योग सदस्यता कार्यक्रम शुरू किया है, जो उद्योग के साथ दीर्घकालिक और रणनीतिक साझेदारी बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया एक व्यवस्थित, सशुल्क जुड़ाव मॉडल है। कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- समर्पित संबंध प्रबंधन
- अनुसंधान कार्यसूचियों के सह-सृजन और दीर्घकालिक सहयोग के अवसर
- संकायों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं और विषयगत गतिविधियों तक पहुँच
- CXO राउंडटेबल, लीडरशिप फोरम और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) कॉन्क्लेव समेत सुव्यवस्थित उद्योग सहभागिता मंच

प्रो. जयंत जैन, संकायाध्यक्ष, कॉर्पोरेट संबंध ने कहा, “हमें विश्वास है कि यह पहल सतत उद्योग-अकादमिक जगत के बीच लगातार जुड़ाव के लिए एक मज़बूत मंच तैयार करेगी, जिससे सार्थक अनुसंधान सहयोग बनाने, नवाचार-संचालित साझेदारी और विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख संगठनों से अधिक भागीदारी, संभव हो पाएगी।”

संस्थान में 'जय भीम सप्ताह-2026' का आयोजन

संस्थान ने डॉ. बी.आर. अंबेडकर की 136वीं जयंती के उपलक्ष्य में 10 अप्रैल 2026 से 16 अप्रैल 2026 तक 'जय भीम सप्ताह 2026' का आयोजन किया। जय भीम सप्ताह की शुरुआत दिनांक 10 अप्रैल 2026 को ब्लड कनेक्ट और एन.एस.एस. के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर से हुई। तत्पश्चात, संस्थान के केंद्रीय पुस्तकालय में एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें 300 से अधिक स्कूली विद्यार्थियों ने भाग लिया। पुस्तक प्रदर्शनी में डॉ. अंबेडकर के जीवन और विचारों से इन विद्यार्थियों को अवगत करवाया गया।

इस समारोह का मुख्य आकर्षण 'जय भीम सप्ताह फिल्म फेस्टिवल' (10-12 अप्रैल, 2026) रहा, जिसने सिनेमा को सामाजिक न्याय से जुड़े सवाल पर विचार-विमर्श करने के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया। फिल्म महोत्सव के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता प्रो. अरविंद कुमार नेमा (उप निदेशक, प्रचालन) ने की और प्रो. हरीश वानखेड़े (जे.एन.यू.) क्यूरेटर एवं मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस महोत्सव में जब्बार पटेल निर्देशित “डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर” और डेनज़ेल वॉशिंगटन निर्देशित “द ग्रेट डिबेटर्स” जैसी फ़िल्में दिखाई गईं। इसके अतिरिक्त ज्योति निशा के निर्देशन में बनी “अंबेडकर: देन एंड नाउ” और नेहा थोंब्रे द्वारा निर्देशित “व्हाट इज़ माई कास्ट?”



जैसी डॉक्यूमेंट्रीज़ भी प्रदर्शित की गई। इन फिल्मों ने दुनिया भर में गरिमा और न्याय के लिए चल रहे संघर्षों के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया। इसके अलावा, इस दौरान श्री गिरीश वानखेड़े (मूवी ट्रेड विश्लेषक), प्रो. रविकांत (सी.एस.डी.एस.), प्रो. अमित थोराट (जे.एन.यू.), फिल्मकार ज्योति निशा और नेहा थोंबरे तथा संस्थान की ओर से प्रो. डिकेंस लियोनार्ड, प्रो. अमिताभ बागची, प्रो. चारु मोंगा ने 'डॉ. अंबेडकर का सिनेमा और समाज के लिए दृष्टिकोण' तथा 'सिनेमा, प्रौद्योगिकी और बाज़ार' पर अपने विचार साझा किए।

दिनांक 12 अप्रैल 2026 को अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति कर्मचारी कल्याण संघ द्वारा संस्थान समुदाय के लिए एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कड़ी में, संस्थान के प्रो. डिकेंस लियोनार्ड द्वारा 13 अप्रैल 2026 को आयोजित अंग्रेज़ी भाषा संबंधी कार्यशाला में प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके बाद डॉ. राखी रथ (क्रेया विश्वविद्यालय) द्वारा 'आत्मविश्वास में वृद्धि' विषयक एक कार्यशाला आयोजित की गई।

संस्थान समुदाय के सदस्यों ने 14 अप्रैल 2026 को अंबेडकर जयंती के व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में संसद भवन का दौरा किया। साथ ही, केंद्रीय पुस्तकालय में 15 अप्रैल 2026 को 'भारतीय दलित अध्ययन संस्थान' (IIDS) द्वारा 'जाति संवेदनशीलता कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

जय भीम सप्ताह के अंतिम दिन अर्थात दिनांक 16 अप्रैल 2026 को आयोजित अंबेडकर स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित उच्चतम न्यायालय में स्वतंत्र अधिवक्ता एवं विधि विदुषी दिशा वाडेकर ने "कॉन्स्टिट्यूशनल मॉरैलिटी ऐज़ अ ट्रांसफॉर्मेटिव आइडियल: डॉ. अंबेडकर्स विज़न" विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि हमें शिक्षा और नैतिकता के माध्यम से औपचारिक शब्दों से आगे बढ़कर संविधान की उस आत्मा को समझने की आवश्यकता है, जो अक्सर व्यक्त नहीं होती। इस व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. रंगन बनर्जी, निदेशक ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित सप्ताह भर की गतिविधियों

का उल्लेख करते हुए कहा कि "आई.आई.टी. दिल्ली में हम मानते हैं कि शैक्षणिक संस्थानों को पथ प्रदर्शक बनना चाहिए, ताकि हम यह दिखा सकें कि समाज को किस दिशा में जाना चाहिए... इस काम में डॉ. अंबेडकर के विचार हमें लगातार मार्ग दिखाते हैं।"

इस समारोह के समापन सत्र में 'प्रिंट योर प्रिएम्बल' गतिविधि, आगंतुकों द्वारा अंबेडकर के प्रति अपने व्यक्तिगत विचार और भावनाएँ अभिव्यक्त करने के लिए रखी गई 'एक शब्द में अंबेडकर' नामक वॉल, डॉ. अंबेडकर के जीवन, दर्शन और योगदान पर आधारित पुस्तकों के एक सजीव एवं आकर्षक पुस्तक मेले, मालविका राज द्वारा प्रस्तुत मधुबनी कला की प्रदर्शनी और संथाली जनजातीय सांस्कृतिक प्रदर्शनी तथा 'गरिमा मार्च' आदि गतिविधियाँ शामिल रहीं। इन कार्यक्रमों ने समग्र रूप से परिसर में समानता, गरिमा और सामाजिक समावेशन पर आधारित विषयों पर संवाद, रचनात्मकता और गहन चर्चा का एक उत्साही वातावरण तैयार किया।

आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता शृंखला के 11वें सत्र का आयोजन

संस्थान के अस्पताल एवं स्वास्थ्य सेवाएँ विभाग द्वारा दिनांक 29 अप्रैल 2026 को सेमिनार हॉल में आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता शृंखला के 11वाँ सत्र का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस सत्र में वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक एवं आई.आई.टी. अस्पताल के पूर्व अध्यक्ष डॉ. शशि भूषण पाठक (डॉ. एस. बी. पाठक) ने “होम्योपैथी – नए परिप्रेक्ष्य” विषय पर अपने ज्ञानवर्धक विचार प्रस्तुत किए।

डॉ. शशि भूषण पाठक ने अपने व्याख्यान में अपने लंबे नैदानिक अनुभव के आधार पर आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं में होम्योपैथी की बढ़ती भूमिका, इसके समग्र दृष्टिकोण तथा संस्थान समुदाय के सामान्य स्वास्थ्य मुद्दों में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

इस सत्र में संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा प्रश्नोत्तरी सत्र में डॉ. पाठक के साथ सक्रिय रूप से संवाद किया। संस्थान का अस्पताल एवं स्वास्थ्य सेवाएँ विभाग अपने “आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता शृंखला” के ज़रिए परिसर में स्वास्थ्य जागरूकता और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इस शृंखला के तहत आयोजित यह 11वाँ सत्र डॉ. पाठक के अमूल्य योगदान से स्मरणीय बन गया।

सत्र के अंत में डॉ. शशि भूषण पाठक को संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया और तदुपरांत धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया।



विश्व पुस्तक दिवस (23 अप्रैल) विशेष



बेहतर ज़िंदगी का रास्ता
किताबों से होकर जाता है!

किताबों से दोस्ती

किताबें करती हैं बातें
बीते ज़मानों की
दुनिया की, इंसानों की
आज की, कल की
एक- एक पल की
खुशियों की, गमों की
फूलों की, बरसों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं!

प्रख्यात रंगकर्मी व कलाकार सफ़दर हाशमी में किताबें हमसे बात करना चाहती हैं? क्या आपने कभी की है कोशिश किताबों से दोस्ती करने की..?

यूनेस्को द्वारा 1995 में पहली बार 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक दिवस के रूप में मनाया गया और तबसे हर वर्ष इस दिन को विश्व पुस्तक दिवस के रूप में मनाया जाता है। जब पहली बार 1995 में विश्व पुस्तक दिवस का आयोजन किया गया था तो इसका उद्देश्य किताबों से दोस्ती कर पढ़ने के शौक को विकसित करना ही था। इस वर्ष के लिए विश्व पुस्तक दिवस की थीम थी: "Go All In - If you're into it, read into it"

यह एक स्थापित बात है कि किताबें मूलतः भाषा और ज्ञान के विकास के लिए ज़रूरी हैं। किताबें दरअसल वह ज़रिया हैं जिनके सहारे हम उस समय को भी जान समझ पाते हैं, जो हमारी पहुंच से बाहर है। हम आने वाले समय व स्थितियों को समझ सकने की एक दृष्टि भी पाते हैं इन किताबों के माध्यम से। किताबें एक खूबसूरत संसार रचती हैं और हमें बताती हैं कि ऐसा संसार बनाया जा सकता है, जहां सभी प्यार और बराबरी से रह सकें। यह ज्ञान और बुद्धि को सृजित करने व उसे प्रचारित करने की ताकत है। किताबों के पन्नों पर छपे अक्षरों व शब्दों में बहुत ताकत होती है, यह न सिर्फ हमें परीक्षाओं में सफल होने की राह सुझाता है, अपितु जीने के बेहतर तरीके सुझाकर बेहतर इंसान बनने में भी हमारी मदद करता है।

तकनीक के विकास के इस दौर में बेहद ज़रूरी है कि हम किताबों से दोस्ती करें। जब हम किताबों से दोस्ती की बात करते हैं तो सिर्फ पाठ्यक्रम की किताबों की बात नहीं होनी चाहिए। किताबों से विद्यार्थियों का संबंध सिर्फ स्कूली परीक्षाओं में अच्छे नंबर लाना नहीं होता अपितु किताबें तो जीवन को समझने में भी हमारी मदद किया करती हैं। किताबों हमें अपने जीवन में सफल होने के साथ-साथ एक बेहतर नागरिक बनने में भी मदद करती हैं। कहा भी गया है कि:

"Books help weave humanity together as a single family, holding a past in common, a history and heritage to craft a destiny that is shared where all voices are heard in the great chorus of human aspiration"

किताबों से गुजरना दुनिया के श्रेष्ठ अनुभवों से गुजरने जैसा है। प्रसिद्ध लेखक निर्मल वर्मा ठीक ही कहते हैं:

"किताबें मन का शोक, दिल का डर या अभाव की हूक कम नहीं करतीं, सिर्फ सबकी आंख बचाकर चुपके से दुखते सिर के नीचे सिरहाना रख देती हैं।"

किताबों या यों कहें कि लिखे हुए शब्दों का इतिहास वस्तुतः मानवता का इतिहास होता है, किताबों के माध्यम से ही हम अपने इतिहास से परिचित होते हैं, किताबें दरअसल भूत और भविष्य को जोड़ने वाली सेतु होती हैं। व्यक्ति के विकास के समान्तर समाज के विकास हेतु आवश्यक बदलाव लाने की दिशा में किताबों की भूमिका काफ़ी महत्वपूर्ण होती है।

किताबें कई तरह की होती हैं- रचनात्मक, तथ्यात्मक, आत्मपरक। कहानी, कविताओं की किताबें रचनात्मक श्रेणी में आती हैं तो इतिहास, समाजशास्त्र की किताबें तथ्यात्मक, जिनसे हमें अपने देश-विदेश के विगत समय व विकास के तथ्य पता चलते हैं। आत्मपरक किताबें वे होती हैं जो स्थापित एवं प्रसिद्ध व्यक्तित्वों द्वारा उनके अपने जीवन तथा समय में लिखे गए होते हैं। इन किताबों से हमें उन व्यक्तित्वों के जीवन व संघर्षों के साथ-साथ उस समय के सामाजिक राजनीतिक स्थिति व संघर्षों का भी पता चलता है। इन सबके अलावा नीति कथाएं हमें नीति संबंधी बोध से युक्त करती हैं। श्रवण कुमार की कहानियां हम सबने पढ़ी हैं। ये किताबें हमें सही आचरण करने की सीख देती हैं और हमारे चरित्र निर्माण में सहायक होती हैं। पंचतंत्र जैसी किताबें इसी श्रेणी में आती हैं। ये किताबें जहां एक ओर हमारा मनोरंजन करती हैं, वहीं सामाजिक स्थितियों को लेकर धारणा बनाने में हमारी सहायता करती हैं। इस तरह ये किताबें हमें एक साथ कई स्तरों पर समृद्ध करती हैं।

किताबें यकीनन हमारी बेहतरीन दोस्त बन सकती हैं। पढ़ने की हमारी आदत हमें ज्ञान व सूचनाओं से समृद्ध तो करती ही हैं, निराश के क्षणों में हमें जूझने का हौसला भी देती हैं और इस तरह वे भरोसे और उम्मीद जैसे भावों को बचाए रखने का काम भी करती हैं।

इन सबसे इतर सामाजिक संरचनाओं को समझने, उनमें निहित विसंगतियों को समझने और उन्हें दूर करने की दिशा में भी मददगार होती हैं किताबें। किताबें न सिर्फ गणित के पेचीदा सवालों को हल करना सिखाती हैं बल्कि जीवन के मुश्किल सवालों के समाधान ढूँढने में भी एक भरोसेमंद दोस्त की तरह हमारी मदद करती हैं। सामाजिक विकास के साथ-साथ उनमें योग देने वाली हस्तियों से हमारा परिचय कराती हैं। सामाजिक जीवन में काम आने

वाले बेहद ज़रूरी सबक भी हमें इन किताबों से मिलते हैं। इन किताबों के माध्यम से हमें हमारे अधिकारों का बोध होता है। यहाँ यह कहना बेहद ज़रूरी है कि किताबों को पढ़ने के लिए अच्छी किताबों का चयन बेहद ज़रूरी है। इसलिए ऐसी किताबें जो आपको व्यक्ति के तौर पर समृद्ध करती हैं, उनका चयन सावधानी से किया जाना ज़रूरी है।

नए विषयों को जानने और किसी भी क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं को प्राप्त करने की क्षमता भी दरअसल पढ़ने की हमारी क्षमता पर ही निर्भर करती है। संबंधों, समाज के प्रति व्यक्ति के नज़रिए को निर्धारित करने में किताबों की बड़ी महती भूमिका होती है। इसीलिए ज़रूरी है कि पढ़ने की आदत विकसित की जाए। पढ़ने को काम की तरह नहीं बल्कि शौक की तरह अपनाएं। यह भी याद रखें कि पढ़ाई सिर्फ स्कूल या विश्वविद्यालय की पाठ्यचर्या तक सीमित नहीं होती वरन जीवन की तरह व्यापक होती है, और उतनी ही व्यापकता व सूक्ष्मता से जीवन के हर मोड़ पर एक सच्चे दोस्त की तरह हमारे काम आती है। शेक्सपियर के शब्दों में कहें तो "किताबें ही वह एकमात्र ज़रिया हैं जो मूर्खता व अज्ञानता सरीखे मनुष्यता के लिए घातक प्रवृत्तियों से लड़ने में हमारी मदद करती हैं।" एक पुरानी कहावत है, आप सब ने अवश्य ही सुनी होगी: "कलम तलवार से अधिक ताकतवर होती है।" स्पष्ट है कि किताबों में निहित विचारों/ तथ्यों में बहुत ताकत होती है। विचार आपको मजबूत करते हैं। सही और गलत में फर्क करना सिखाते हैं, जीवन संघर्ष से जूझने का साहस देते हैं और जीतने की उम्मीद को बचाए रखते हैं और इस तरह से मनुष्यता के विकास में, राष्ट्र के निर्माण में योगदान देते हैं।

पढ़ाई को किसी सीमित रूपरेखा में देखने वाले दरअसल किताबों की व्यापक उपयोगिता से अनजान होते हैं। पढ़ना हमें मजबूत बनाता है। एक बड़े साहित्यकार दिनकर की बात इस प्रसंग में याद आती है कि "ज्ञान व्यक्ति को उदार ही बनाता है।" हमें यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए और पढ़ने की आदत को बनाए रखना चाहिए। यदि ऐसी आदत आपमें नहीं है तो इस आदत को जल्दी से अपना लीजिए। देखिएगा, ये किताबें आपके जीवन को सुन्दर बनाएंगी, उसे जीवन से भरपूर बनाएंगी।

डॉ. स्वाती ठाकुर

हिंदी कक्ष